17 फरवरी 2011, कुल पृष्ठ : 12, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-61 / 2009-11

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान देखिये

जी-जागरण पर

प्रतिदिन प्रातः 6.40 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 33, अंक : 22 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

फरवरी (द्वितीय), 2011(वीर नि. संवत् -2537) सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव सानंद संपन्न

भिण्ड (म.प्र.) : यहाँ पुस्तक बाजार स्थित श्री दि.जैन बाहुबलि मंदिर द्वारा श्री महावीर कीर्तिस्तंभ परिसर में आयोजित श्री आदिनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव शनिवार, दिनाँक 29 जनवरी से शुक्रवार, दिनाँक 4 फरवरी 2011 तक अनेक मांगलिक कार्यक्रमों के साथ सानन्द संपन्न हुआ। इस प्रसंग पर श्री बाहुबलि मंदिर में सुन्दर व आकर्षक नवनिर्मित वेदी पर श्री आदिनाथ भगवान व श्री भरत भगवान के 71 इंच की अवगाहना वाले धवल पाषाण के खड्गासन जिनबिम्बों के साथ पूर्व प्रतिष्ठित, श्री भगवान बाहुबलि के जिनबिम्ब भी विराजित हुये।

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के निर्देशन में सम्पन्न हुये इस महामहोत्सव में उपाध्याय श्री निर्भयसागरजी महाराज के मंगल सानिध्य व प्रवचनों के साथ-साथ अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त आध्यात्मिक प्रवक्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के प्रासंगिक प्रवचनों को प्रथम बार सुनने वाले समस्त जनसमुदाय द्वारा विशेष तौर पर सराहा गया। इनके अतिरिक्त पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील, पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा, पण्डित महेन्द्रजी शास्त्री खनियांधाना, पण्डित अनिलजी 'धवल' भोपाल एवं श्री टोडरमल महाविद्यालय जयपुर व आचार्य धरसेन महाविद्यालय कोटा के छात्रों के प्रवचनों का भी लाभ समय-समय पर उपस्थित जनसमुदाय को मिला।

पंचकल्याणक की सम्पूर्ण प्रतिष्ठा विधि प्रतिष्ठाचार्य पण्डित रमेशचंदजी बांझल इन्दौर व सह-प्रतिष्ठाचार्य पण्डित धर्मेन्द्रकुमारजी शास्त्री कोटा ने पण्डित महेन्द्रकुमारजी शास्त्री खनियांधाना, ब्र.रविजी ललितपुर, पण्डित अनिलजी 'धवल' भोपाल, पण्डित मनोजकुमारजी मुजफ्फरनगर एवं श्री टोडरमल महाविद्यालय के छात्रों के सहयोग से शुद्ध तेरापंथ आम्नायानुसार सम्पन्न करायी गई। संपूर्ण मंच संचालन एवं निर्देशन पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर ने किया।

इस महामहोत्सव की आरंभबेला में अयोध्यानगरी के सिंहद्वार का उद्घाटन श्री मनीषजी पटवारी परिवार दिल्लीवालों ने, ध्वजारोहण श्री सतीशचंद्रजी दिल्ली ने एवं प्रतिष्ठा मण्डप का उद्घाटन श्री महेन्द्रकुमारजी रपरिया करहलवालों ने किया।

जन्मकल्याणक के पावन अवसर पर प्रथम पालना झूलन का सौभाग्य श्री प्रेमचंदजी बजाज परिवार कोटावालों को मिला। राजा श्रेयांस बनकर आहारदान श्री हृदयमोहनजी रपरिया परिवार भिण्ड ने दिया।

जिनमंदिर के नवनिर्मित शिखर पर कलशारोहण श्री चक्रेशकुमारजी अशोककुमारजी सुशीलकुमारजी बजाज (चक्रेश सुपारी) परिवार कोलकाता ने तथा ध्वजारोहण श्री नरेशचंदजी जैन अहमदाबाद ने किया। नवनिर्मित वेदी पर विराजमान मूलनायक भगवान आदिनाथ पर चांदी का छत्र चढाने का सौभाग्य श्री प्रदीपकुमारजी रपरिया कोलकाता को प्राप्त हुआ।

सम्पूर्ण कार्यक्रमों को प्रासंगिक भक्ति-गीतों व मधुर स्वर लहरियों से श्री सीमंधर संगीत सरिता छिन्दवाड़ा ने मधुरता प्रदान की।

इस अवसर पर लगभग 50 हजार रुपये का सत्साहित्य एवं 1186 घण्टों के सी.डी./डी.वी.डी. घर-घर पहुँचे एवं 1 लाख 15 हजार रुपये की दानराशि संस्था को प्राप्त हुयी।

महोत्सव को सफल बनाने में समिति के समस्त पदाधिकारियों के साथ-साथ श्री दिगम्बर जैन बाहुबलि युवा/युवती/महिला संगठनों एवं अ. भा. जैन युवा फैडरेशन शाखा भिण्ड का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा।

विचार गोष्ठी सम्पन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री दिगम्बर जैन तेरापंथी बड़ा मंदिर (टोडरमलजी का मंदिर) में दिनांक 6 फरवरी को राजस्थान जैन साहित्य परिषद् की ओर से ''आचार्य कुन्दकुन्द : व्यक्तित्व एवं कृतित्व'' विषय पर विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य वक्ता के रूप में डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल ने अपने मार्मिक व्याख्यान में आचार्य कुन्दकुन्द से जुड़े अनेक पहलुओं का तर्क संगत विवेचन प्रस्तुत किया। साथ ही डॉ. प्रेमचन्दजी रांवका एवं श्री विनयचन्दजी पापड़ीवाल के उद्बोधन का लाभ भी मिला।

इस अवसर पर परिषद् का परिचय श्री नवीनकुमारजी बज ने दिया, अंत में आभार प्रदर्शन श्री महेशजी चांदवाड़ ने किया। गोष्ठी के संयोजक श्री शांतिलालजी गंगवाल थे।

इसी प्रसंग पर जिनमंदिर में 'पण्डित टोडरमल प्रवचन कक्ष' एवं विगत 300 वर्षों में मंदिर से जुड़े विशिष्ट जैन विद्वानों की 'प्रशस्ति पट्टिका' का अनावरण किया गया। गोष्ठी के पूर्व पण्डित संजीवकुमारजी गोधा के प्रवचन का लाभ मिला। ज्ञातव्य है कि यहाँ आपके द्वारा प्रतिदिन प्रवचन होते हैं।

सम्पादकीय – 50

पंचास्तिकाय : अनुशीलन

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

गाथा– ७९

विगत गाथा में यह कहा गया है कि जो आदेश (कथन) मात्र से मूर्त हैं तथा पृथ्वी आदि चार धातुओं का कारण वह परमाणु है। शब्द स्कन्धजन्य है, स्कन्ध परमाणु का संघात है। शब्द पुद्गल स्कन्ध की पर्याय है, आदि। मूलगाथा इसप्रकार है –

सद्दो खंधप्पभवो, खंधो परमाणुसंगसंघादो।
पुट्ठेसु तेसु जायदि सद्दो उप्पादिगो णियदो॥७९॥

(हरिगीत)

स्कन्धों के टकराव से शब्द उपजें नियम से।
शब्द स्कन्धोत्पन्न है अर स्कन्ध अणु संघात है॥७९॥

शब्द स्कन्धजन्य है, स्कन्ध परमाणुदल का संघात है अर्थात् स्कंध परमाणु से मिलकर बना है और उन स्कन्धों के स्पर्शित होने-टकराने से शब्द उत्पन्न होते हैं। इसप्रकार वे नियतरूप से उत्पाद्य हैं।

समय व्याख्या टीका में आचार्य अमृतचन्द्रदेव कहते हैं कि शब्द पुद्गल स्कन्ध की पर्याय है।

इस लोक में बाह्य श्रवणेन्द्रिय द्वारा अवलंबित तथा भावेन्द्रिय द्वारा जानने योग्य ध्वनि शब्द है। वह शब्द अनन्त परमाणुओं की स्कन्धरूप पर्याय है।

बहिरंग साधनभूत महा स्कन्धों द्वारा शब्द परिणमनरूप उत्पन्न होने से वह स्कन्धजन्य हैं, क्योंकि महास्कन्ध पट रूप टकराने से शब्द उत्पन्न होता है।

पुनश्च यह बात विशेष समझाई जाती है कि एक दूसरे में प्रविष्ट होकर, सर्वत्र व्याप्त होकर अपने स्वभाव से ही निर्मित अनन्त परमाणुमयी शब्द योग्य वर्गणाओं से समस्त लोक में भरा है, फिर भी जहाँ-जहाँ बहिरंग कारण सामग्री उदित होती है, वहाँ-वहाँ वे वर्गणायें शब्दरूप से स्वयं परिणमित होती हैं; इसप्रकार शब्द नियतरूप से उत्पाद्य हैं, उत्पन्न कराने योग्य हैं; इसलिए वे स्कन्धजन्य हैं।

इसी बात को कवि हीरानन्दजी कहते हैं –

(दोहा)

सबद खंध-भव मानिए, अनु समूह का खंध।
खंध-खंध मिलि धरषणा, उपजै सबद प्रबंध॥३४८॥

(दोहा)

एक सब्द संजोगतैं, सबद बरगना-पुंज।
सबद रूप ह्वै परिनवै, जहँलगि पहुँचे गुंज॥३५०॥

अपने काव्य में कवि कहते हैं कि शब्द स्कन्धजन्य हैं तथा स्कन्ध अणुओं का समूह है। स्कन्ध के घर्षण से शब्द उत्पन्न होते हैं। आगे सवैया में कवि कहता है कि अपने स्वभाव से शब्दरूप वर्गणाओं से यत्र-तत्र आकाश में वर्गणाओं का अस्तित्व है, आत्मा से संबंध होने पर स्कन्ध काल पाकर शब्द रूप हो जाते हैं। इसतरह एक शब्द के संयोग से शब्द वर्गणा के पुंज जहाँ तक आवाज पहुँचती है; शब्दरूप परिणमते हैं।

गुरुदेवश्री कानजीस्वामी कहते हैं कि शब्द स्कन्ध से उत्पन्न होता है। कोई भाव वाली वस्तु है, जिसकी पर्याय पलटकर शब्द उत्पन्न होते हैं। अनन्त परमाणुओं के मिलाप से स्कन्ध होते हैं। उन स्कन्धों से परस्पर मेल होता है, तब भाषा वर्गणा के परमाणु शब्द रूप से परिणमते हैं।

भावार्थ यह है कि द्रव्य कर्णेन्द्रिय के निमित्त से भाव कर्णेन्द्रिय के द्वारा जो आवाज जानने में आती है, उसे शब्द कहते हैं। शब्द ज्ञान नहीं है और ज्ञान शब्द नहीं है। वीतरागी का उपदेश भी परमाणु की पर्याय है वे शब्द अनन्त परमाणुओं के स्कन्ध से उत्पन्न होता है।

जहाँ-जहाँ शब्द करने की बाह्य सामग्री का संयोग मिलता है, वहाँ-वहाँ शब्द योग्य वर्गणा स्वयमेव शब्दरूप से परिणमित होती हैं। शब्द के दो प्रकार हैं – १. प्रायोगिक २. वैश्रसिक। प्रायोगिक वे हैं जो पुरुषादि की भाषा के प्रयोग से तथा वीणा, बांसुरी आदि से उत्पन्न होते हैं तथा मेघादि की गर्जनारूप से उत्पन्न होने वाले शब्द वैश्रसिक हैं।

जब भाषा लायक परमाणु भाषारूप से परिणमित होते हैं, तब बाह्य अनुकूल सामग्री को निमित्त कहा जाता है।

इसप्रकार यहाँ यह सिद्ध किया है कि शब्द पुद्गल की पर्याय है।●

आध्यात्मिक शिक्षण शिविर संपन्न

सिद्धायतन (म.प्र.) : यहाँ दिनाँक 7 से 11 फरवरी तक तीर्थधाम सिद्धायतन के तृतीय वार्षिकोत्सव के अवसर पर आध्यात्मिक शिक्षण शिविर एवं बीस तीर्थंकर विधान का आयोजन सानंद संपन्न हुआ।

इस अवसर पर डॉ. उत्तमचंदजी सिवनी, पण्डित राजेन्द्रजी जबलपुर, पण्डित श्रेणिकजी जबलपुर, पण्डित रूपचंदजी बण्डा एवं पण्डित सुरेशजी टीकमगढ के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ मिला।

शिविर का उद्घाटन श्री निहालजी जैन जयपुर ने एवं ध्वजारोहण चौ. अशोकजी जैन शाहगढ ने किया। विधान के उद्घाटनकर्ता श्री मस्ताई प्रमोदजी जैन घुवारा थे।

विधान का आयोजन श्रीमती बेटीबाई खड़ैरी परिवार की ओर से किया गया।

वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव

कोटा (राज.) : यहाँ श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल एवं जैन युवा फैडरेशन के तत्त्वावधान में श्री दिगम्बर जैन पोरवाल मंदिर, रामपुरा में दिनाँक 22 से 24 जनवरी 2011 तक वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल' के सानिध्य में प्रतिष्ठाचार्य ब्र. नन्हे भैया सागर द्वारा संपन्न हुआ।

इस अवसर पर ब्र.नन्हे भैया के प्रवचनों का लाभ उपस्थित जनसमुदाय को मिला।

दिनाँक 24 जनवरी को भगवान शांतिनाथ एवं दो पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमाओं को नवीन वेदी पर विराजमान कर आनंद और उत्साहपूर्वक समारोह संपन्न किया गया। **– जिनेन्द्र जैन**

आर्ट ऑफ हैप्पी लिविंग सेमिनार संपन्न

लोनावाला-मुम्बई : यहाँ दिनाँक 29 व 30 जनवरी को दो दिवसीय आर्ट ऑफ हैप्पी लिविंग वर्कशॉप का आयोजन किया गया।

इस वर्कशॉप में विभिन्न धार्मिक गेम/एक्टिविटी के माध्यम से आध्यात्मिक सिद्धान्तों का भाव-भासन करने पर जोर दिया गया, इससे जिनागम की सिद्धान्तपरक बातों को जीवन में उतारने का औचित्य ख्याल में आया।

आज का युवा वर्ग धर्म को मात्र खाने-पीने के संयम और पूजा-पाठ तक ही सीमित समझता है, अन्य लोग भी अध्यात्मिक सिद्धांतों को बुद्धि से समझ तो लेते हैं; पर जीवन का अंग नहीं बनाते। जीवन की हर समस्या का समाधान उनसे नहीं ढूँढते हैं। आध्यात्मिक सिद्धांतों को पढना अलग बात है और उनको जीना अलग बात है। आर्ट ऑफ हैप्पी लिविंग वर्कशॉप का उद्देश्य यही भावभासन कराना है कि अध्यात्म मात्र आगामी सुख के लिए ही नहीं; बल्कि वर्तमान में हमारे जीवन को शांत और सुखमय बनाने में अत्यंत सक्षम है।

वर्कशॉप के प्रारंभ में सभी को अपनी समस्याओं को एक लिफाफे में लिखने का निर्देश दिया गया। इन दो दिनों में जिस समस्या का निराकरण हुआ, उसे काटकर उस सिद्धांत को लिखना था, जिससे समस्या का निराकरण हुआ है।

इस वर्कशॉप में सरल भाषा व रोचक शैली में क्रमबद्धपर्याय, वस्तु-स्वातंत्र्य, अकर्तावाद, उपयोग का प्रयोग, पर्याय की क्षणभंगुरता आदि आध्यात्मिक सिद्धांतों को प्रतिदिन अपने जीवन में अपनाने का तरीका बताया गया। वर्कशॉप के अंत तक सभी लोगों की सभी समस्याओं का निराकरण हो गया और सभी ने अपनी समस्याओं के लिफाफे फाड़कर इन सिद्धांतों के माध्यम से जीवन में सुख-शान्ति लाने का संकल्प किया।

अनेक लोगों ने प्रथम बार जैन सिद्धांतों को जीवन में सुख-शान्ति लाने के दृष्टिकोण से देखा था; अत: उन्होंने अपने-अपने नगरों में भी इस वर्कशॉप को करने की भावना व्यक्त की।

इस वर्कशॉप में मुम्बई, दिल्ली, कलकत्ता, इंदौर, हैदराबाद, औरंगाबाद, पुणे, सूरत, नासिक, कोयम्बटूर आदि नगरों से देशभर के युवा एवं शिक्षित वर्ग सम्मिलित हुआ और सभी गतिविधियों में उत्साहपूर्वक भाग लिया।

इस अवसर पर श्री अविनाशकुमारजी टडैया द्वारा संकल्प विधि से भूमिका तैयार करने के पश्चात् डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया, श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल और विदुषी स्वानुभूति जैन शास्त्री ने आध्यात्मिक सिद्धांतों को सरल और रोचक तरीके से प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम का आयोजन श्री अविनाशकुमारजी टडैया के निरीक्षण में श्री आराध्य टडैया शास्त्री ने किया। सभी कार्यक्रमों का संचालन श्रीमती स्वानुभूति शास्त्री ने किया।

इस वर्कशॉप को अपने शहर में आयोजित करवाने अथवा इसके विषय में विस्तृत जानकारी हेतु संपर्क करें - डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया, 09321295265/09821923722

- श्रीमती विद्याउत्तम शाह

प्रदेश की श्रेष्ठ पाठशाला !

उदयपुर (राज.) : यहाँ दिनांक 3 जनवरी को युवा फैडरेशन के कार्यकर्ता प्रशिक्षण शिविर के अवसर पर राजस्थान प्रदेश की श्रेष्ठ पाठशाला का पुरस्कार वी.वि.पाठशाला सेक्टर 11, उदयपुर को दिया गया। महावीर दि.जैन चैरिटेबल ट्रस्ट एवं अरहंत युवा मंच की ओर से चलने वाली इस पाठशाला के निर्देशक पण्डित खेमचंदजी शास्त्री हैं। प्रत्येक रविवार को लगने वाली इस पाठशाला में लगभग 100 विद्यार्थी नियमित उपस्थित रहते हैं। सभी विद्यार्थी व अध्यापक गणवेश में होते हैं एवं सभी विद्यार्थियों का जन्मदिन विशेषरूप से मनाया जाता है।

इस अवसर पर राजस्थान प्रदेश के श्रेष्ठ कार्यकर्ता के रूप में पण्डित संजयजी शास्त्री बड़ामलहरा को भी सम्मानित किया गया।

आत्मार्थी छात्रों के लिए अपूर्व अवसर

आत्मार्थी छात्र डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के सान्निध्य में रहकर चारों अनुयोगों के माध्यम से जैनधर्म का सैद्धान्तिक अध्ययन कर सकें तथा साथ ही संस्कृत, न्याय, व्याकरण आदि विषयों का आवश्यक ज्ञान प्राप्त करें ह्न इस महत्त्वपूर्ण उद्देश्य से जयपुर में विभिन्न ट्रस्टों के सहयोग से श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय चल रहा हैं, जिसमें पूरे देश के विभिन्न भागों से आये छात्र अध्ययन कर रहे हैं।

अबतक 573 छात्र शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण करके शासकीय एवं अर्द्धशासकीय सेवाओं में रहकर विभिन्न स्थानों में तत्त्वप्रचार की गतिविधियाँ संचालित कर रहे हैं, जिनमें से 59 छात्र जैनदर्शनाचार्य की स्नातकोत्तर परीक्षा उत्तीर्ण कर चुके हैं। अनेक छात्र पी.एच.डी./नेट/जे.आर.एफ. आदि भी कर चुके हैं।

ज्ञातव्य है कि यहाँ प्रवेश पानेवाले छात्रों को राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय) की जैनदर्शन (त्रिवर्षीय शास्त्री स्नातक) कोर्स की परीक्षायें दिलाई जाती हैं, जो बी.ए. के समकक्ष हैं तथा सरकार द्वारा आई. ए. एस., कैट, मैट, जे.आर.एफ. जैसी किसी भी सर्वमान्य प्रतियोगिता परीक्षा में सम्मिलित होने के लिये मान्यता प्राप्त हैं।

शास्त्री परीक्षा में प्रवेश के पूर्व छात्र को दो वर्ष का राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय) का प्राक्शास्त्री परीक्षा का पाठ्यक्रम पढ़ाया जाता है, जो हायर सैकेण्ड्री (12वीं) के समकक्ष है। इसप्रकार कुल 5 वर्ष का पाठ्यक्रम है। इसके बाद यदि छात्र चाहें तो दो वर्ष का जैनदर्शनाचार्य का कोर्स भी कर सकते हैं, जो (एम.ए.) के समकक्ष है।

प्राक्शास्त्री में प्रवेश हेतु किसी भी प्रदेश के माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की सेकेण्डरी (दसवीं) परीक्षा विज्ञान, गणित, सामाजिक विज्ञान व अंग्रेजी सहित उत्तीर्ण होना आवश्यक है।

यहाँ डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, बाल ब्र. यशपालजी जैन, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा, पण्डित पीयूषजी शास्त्री एवं पण्डित सोनूजी शास्त्री के सान्निध्य में छात्रों को निरंतर आध्यात्मिक वातावरण प्राप्त होता है।

सभी छात्रों को आवास एवं भोजन की सुविधा नि:शुल्क रहती है।

नया सत्र 20 जून 2011 से प्रारंभ होगा।

स्थान अत्यंत सीमित है; अत: प्रवेशार्थी शीघ्र ही निम्नांकित पते से प्रवेशफार्म मंगाकर अपना प्रार्थना-पत्र अंक सूची सहित जयपुर प्रेषित करें।

यदि दसवीं का परीक्षाफल अभी उपलब्ध न हुआ हो तो पूर्व परीक्षाओं की अंक सूची की सत्यप्रतिलिपि के साथ प्रार्थनापत्र भेज सकते हैं।

दसवीं का परीक्षा परिणाम प्राप्त होते ही तुरंत भेज दें।

यदि प्रवेश योग्य समझा गया तो उन्हें **जयपुर (राज.) में 15 मई से 1 जून, 2011 तक** होनेवाले ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण शिविर में साक्षात्कार हेतु बुलाया जायेगा, जिसमें उन्हें प्रारंभ से अन्त तक रहना अनिवार्य होगा।

पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

प्राचार्य, श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय,

ए-4, बापूनगर, जयपुर-302015 (राज.)

फोन :(0141) 2705581, 2707458, फैक्स - 2704127

क्यों लें महाविद्यालय में प्रवेश ?

1. श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय का सन् 1977 से 34 वर्षों का गौरवशाली इतिहास है।
2. छात्रों को यहाँ पूर्णत: धार्मिक परिवेश मिलता है, जिससे वे संस्कारशील धर्मनिष्ठ बन जाते हैं।
3. डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, ब्र. यशपालजी जैन, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील, पण्डित संजीवजी गोधा, पण्डित पीयूषजी शास्त्री, पण्डित सोनूजी शास्त्री आदि अनेक विशिष्ट विद्वानों के सान्निध्य में सतत् प्रशिक्षण से जैनतत्त्वज्ञान/दर्शन के प्रकाण्ड विद्वान बनते हैं।
4. पूरे देश में धार्मिक अवसरों पर प्रवचन/विधान/पंचकल्याणक आदि कार्यों के निमित्त भ्रमण के अवसर के साथ-साथ समाज के साथ रहने का प्रायोगिक ज्ञान सीखने को मिलता है।
5. जैनदर्शन के विद्वान होने से स्व के कल्याण के साथ-साथ अपने परिवार-समाज के कल्याण में निमित्त होते हैं।
6. छात्रावास में रहने से अपने हिताहित का स्वयं निर्णय करने की सामर्थ्य प्रगट होती है।
7. यहाँ विभिन्न प्रान्तों के छात्रों के साथ रहकर पूरी भारतीय संस्कृति का परिचय प्राप्त करने का अवसर मिलता है।
8. महाविद्यालय के छात्र औसतन प्रतिवर्ष मैरिट में स्थान प्राप्त करते हैं।
9. संस्कृत भाषा में शास्त्री (बी.ए.) की डिग्री राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान की होने से अपेक्षाकृत रोजगार के अधिक उन्नत अवसर उपलब्ध होते हैं।
10. दर्शन व संस्कृत विषय के साथ आई.ए.एस. जैसी राष्ट्रीय प्रतियोगी परीक्षा व आर.ए.एस. आदि प्रान्तीय प्रतियोगी परीक्षाओं में उत्तीर्णता के अधिक अवसर प्राप्त होते हैं।
11. छात्रों की वक्तृत्वशैली, तर्कशैली एवं अध्ययनशीलता का विशेष विकास होता है, जिससे छात्र अन्य क्षेत्रों में भी सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

इसप्रकार श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय में प्रवेश पाकर आपके बालक का सर्वांगीण विकास होता है। वह अपने और अपने परिवार, समाज की उन्नति में निमित्त होता है। जैनदर्शन का विद्वान बनकर स्व-पर कल्याण के सम्पादन हेतु अग्रसर होता है।

क्या आप नहीं चाहते कि आपका बालक भी ऐसा हो ? यदि हाँ ... तो महाविद्यालय में प्रवेश हेतु बालक को **दिनांक 15 मई से 1 जून 2011 तक जयपुर (राज.)** में आयोजित शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर में अवश्य भेजें।

- पीयूष शास्त्री एवं सोनू शास्त्री

फॉर्म मंगाने का पता : श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय, ए-4, बापूनगर, जयपुर-15, फोन-0141-2705581, 2707458

श्री कुन्दकुन्द दिगम्बर जैन स्वाध्याय मंडल ट्रस्ट, नागपुर (रजि.) द्वारा संचालित

श्री महावीर विद्या निकेतन

(अध्यात्म के विशुद्ध प्रचार-प्रसार हेतु स्थापित महाराष्ट्र का प्रथम छात्रावास)

अत्यंत हर्ष का विषय है कि महाराष्ट्र की उपराजधानी व आद्यौगिक नगरी नागपुर में श्री कुन्दकुन्द दिगम्बर जैन स्वाध्याय मंडल ट्रस्ट, नागपुर द्वारा बालकों में लौकिक व नैतिक संस्कारों के साथ-साथ विशुद्ध स्व-पर कल्याणकारी दिगम्बर जैनधर्म के संस्कारों के साथ तत्त्वज्ञान से परिचय एवं स्वावलम्बनपूर्वक निराकुलता से जीवन निर्माण में अग्रसर होने के उद्देश्य से दिनांक 6 जुलाई 2008 को श्री महावीर विद्यानिकेतन की स्थापना की गई। विद्या निकेतन में कक्षा आठवीं से दसवीं तक का त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम निश्चित किया गया है। इसके चतुर्थ सत्र में प्रवेश हेतु चतुर्दिवसीय साक्षात्कार शिविर दिनाँक 10 से 13 अप्रैल, 2011 तक निश्चित हुआ है।

इस वर्ष हमें 20 विद्यार्थियों को प्रवेश देना निश्चित हुआ है।

क्यों लें प्रवेश ?

1. उच्चकोटि के विद्वानों के सानिध्य में लौकिक एवं धार्मिक शिक्षा देने का सर्व सुविधायुक्त उत्कृष्ट संस्थान।
2. बालकों के धार्मिक एवं लौकिक सर्वांगीण विकास को प्राथमिकता।
3. आवास एवं भोजन की नि:शुल्क सुविधा।
4. छात्रों के मनोरंजन के साथ वाक् कौशल के विकास व ज्ञानप्राप्ति हेतु प्रवचन, कक्षा, गोष्ठियाँ, भाषण, वाद -विवाद आदि ज्ञानवर्धक कार्यक्रमों का आयोजन।
5. छात्रों के बौद्धिक व मानसिक विकास हेतु पुस्तकालय व कम्प्यूटर प्रशिक्षण की व्यवस्था।
6. छात्रों के शारीरिक विकास हेतु नियमित व्यायाम, योग, रुचि अनुसार खेलों की सुविधा।
7. नागपुर के प्रतिष्ठित विद्यालयों में सेमी इंग्लिश (हिन्दी व मराठी) व हायर इंग्लिश मीडियम से अध्ययन की व्यवस्था।
8. स्कूल के अंग्रेजी, विज्ञान, गणित जैसे कठिन विषयों के लिये विशेष अध्यापकों की व्यवस्था।

श्री महावीर विद्या निकेतन का धार्मिक पाठ्यक्रम

कक्षा - 8 (धर्म प्रवेशिका)	कक्षा - 9 (धर्मालंकार)	कक्षा - 10 (धर्म विशारद)
1. बालबोध पाठमाला भाग-1,2,3	1. वीतराग विज्ञान - 1,2,3	1. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग - 1,2
2. छहढाला-पूर्वार्द्ध	2. छहढाला - उत्तरार्ध	2. तत्त्वार्थ सूत्र - 7 से 10
3. तत्त्वार्थसूत्र-अध्याय-1 व 2	3. तत्त्वार्थसूत्र - अध्याय-3 से 6	3. द्रव्य संग्रह
4. आप कुछ भी कहो (स्वयं पठन)	4. भक्तामर स्तोत्र	4. जीवंधर चरित्र (स्वयं पठन)
5. कंठपाठ-जिनेन्द्र पूजन, महावीराष्टक, मङ्गलाष्टक, स्तुतियाँ एवं बाल भावना	5. राम कहानी (स्वयं पठन)	5. धर्म के दशलक्षण - उत्तरार्द्ध
	6. धर्म के दशलक्षण - पूर्वार्द्ध	6. कण्ठपाठ - तत्त्वार्थसूत्र
	7. कण्ठपाठ - भक्तामर स्तोत्र	

प्रवेश प्रक्रिया

कक्षा सात में 60% अंक प्राप्त विद्यार्थी दिनाँक 1 अप्रैल तक प्रवेश फार्म अंक सूची की प्रतिलिपी सहित कार्यालय में जमा करावें एवं रविवार दिनांक 1 अप्रैल से बुधवार 13 अप्रैल, 2011 तक आयोजित साक्षात्कार शिविर में पालकों के साथ अनिवार्यरूप से उपस्थित होवें।

संपर्क सूत्र : नेहरू पुतला, इतवारी, नागपुर-440002 (महा.), फोन (0712) 6979257, 2765200 (ऑफिस), अशोक जैन (मंत्री) (0712) 2772378, डॉ. राकेश जैन शास्त्री (मार्गदर्शक) - 09373005801, नरेश जैन (संयाजक) - 937310022, प्रियदर्शन गहानकरी (उपसंयोजक) -09881598899, पं. विपिन शास्त्री (प्राचार्य) - 09860140111, पं. मनीष शास्त्री (अधीक्षक)-08087216959

गृहस्थ के आवश्यक कार्य और पूजा

– सीमा जैन, उदयपुर

देवपूजा, गुरुपासना, स्वाध्याय, संयम, तप और दान – ये छह आवश्यक कार्य गृहस्थों के माने गये हैं। उनमें देवपूजा को प्रथम स्थान दिया गया है।

देवपूजा गुरुपास्ति स्वाध्याय: संयमस्तप:।
दानं चेति गृहस्थानां, षट् कर्माणि दिने–दिने।।[१]

पूजन : पूजन शब्द में पंच परमेष्ठी की वंदना, नमस्कार, स्तुति, भक्ति तथा जिनवाणी की सेवा व प्रचार–प्रसार करना, जैनधर्म की प्रभावना करना, जिनमंदिर एवं जिनप्रतिमा का निर्माण करना–कराना आदि अनेक कार्य सम्मिलित हैं। जिनमार्ग में सच्ची श्रद्धा ही वास्तविक जिनपूजन है।

''का भक्ति पूजा ? अर्हदादि गुणानुरागो भक्ति:। पूजा द्विप्रकारा – द्रव्यपूजा भावपूजा चेति। गन्धपुष्पधूपाक्षतादिदानं अर्हदाद्युद्दिश्य द्रव्यपूजा, अभ्युत्थान–प्रदक्षिणीकरणप्रणमनादिका कायक्रिया च वाचा गुणसंस्तवनं च। भावपूजा मनसा तद्गुणानुस्मरणम्।''[२]

प्रश्न : भक्ति और पूजा किसे कहते हैं ?

उत्तर : अरहंत आदि के गुणों में अनुराग भक्ति है। पूजा के दो प्रकार हैं – द्रव्यपूजा और भावपूजा।

अरहंत आदि का उद्देश्य करके गंध, पुष्प, धूप, अक्षतादि अर्पित करना द्रव्यपूजा है तथा उनके आदर में खड़े होना, प्रदक्षिणा करना, प्रणाम करना आदि शारीरिक क्रिया और वचन से गुणों का स्तवन भी द्रव्यपूजा है। मन से उनके गुणों का स्मरण करना भावपूजा है।

द्रव्यपूजा एवं भावपूजा के संबंध में पण्डित सदासुखदासजी इसप्रकार लिखते हैं –

''अरहन्त के प्रतिबिम्ब का वचनद्वार से स्तवन करना, नमस्कार करना, तीन प्रदक्षिणा देना, अंजुलि मस्तक चढाना, जलचन्दानादिक अष्टद्रव्य चढाना द्रव्यपूजा है।

अरहंत के गुणों में एकाग्रचित्त होकर, अन्य समस्त विकल्प छोड़कर गुणों में अनुरागी होना तथा अरहंत के प्रतिबिम्ब का ध्यान करना भावपूजा है।''[३]

इस संदर्भ में आचार्य समन्तभद्र का कथन द्रष्टव्य है –

''न पूजयार्थस्त्वयि वीतरागे, न निन्दया नाथ ! विवान्त वैरे।
तथापि ते पुण्य गुणस्मृतिर्न:, पुनाति चित्तं दुरिताञ्जनेभ्य: ।।[४]

यद्यपि जिनेन्द्र भगवान वीतराग हैं, अत: उन्हें अपनी पूजा से कोई प्रयोजन नहीं है तथा वैर रहित हैं, अत: निन्दा से भी उन्हें कोई प्रयोजन नहीं है; तथापि उनके पवित्र गुणों का स्मरण पापियों के पापरूप मल से मलिन मन को निर्मल कर देता है।''

आचार्य अमृतचंद्र ने भी कहा है –

''अयं हि स्थूललक्ष्यतया केवलभक्तिप्रधानस्याज्ञानिनो भवति। उपरितन–भूमिकायामलब्धास्पदस्यास्थानरागनिषेधार्थं तीव्ररागज्वर–विनोदार्थं वा कदाचिज्ज्ञानिनोऽपि भवतीति।

इसप्रकार का राग मुख्यरूप से मात्र भक्ति की प्रधानता और स्थूल लक्ष्यवाले अज्ञानियों को होता है। उच्चभूमिका में स्थिति न हो तो तब तक अस्थान का राग रोकने अथवा तीव्ररागज्वर मिटाने के लिए कदाचित् ज्ञानियों को भी होता है।''[५]

उक्त दोनों कथनों पर ध्यान देने से यह बात स्पष्ट होती है कि आचार्य अमृतचंद्र तो कुस्थान में राग के निषेध और तीव्ररागज्वर निवारण की बात कहकर नास्ति से बात करते हैं और उसी बात को आचार्य समन्तभद्र चित्त की निर्मलता की बात कहकर अस्ति से कथन करते हैं।

इसप्रकार पूजन एवं भक्ति का भाव मुख्यरूप से अशुभराग व तीव्रराग से बचाकर शुभराग व मंदरागरूप निर्मलता प्रदान करता है।

सम्यक्त्व प्राप्ति का कारण –

तिलोयपण्णत्ती आदि ग्रन्थों में सम्यक्त्वोत्पत्ति के कारणों में जिनबिम्बदर्शन को भी एक कारण बताया है। पूजन सम्यक्त्वोत्पत्ति, भेदविज्ञान, आत्मानुभूति एवं वीतरागता की वृद्धि में निमित्तभूत है।

''तुम गुण चिन्तत निज–पर विवेक प्रगटै, विघटें आपद अनेक।

इसी में आगे लिखा है –

जय परम शान्त मुद्रा समेत, भविजन को निज अनुभूति हेत।[६]

हे भगवन् ! आपके निर्मल गुणों के चिन्तन–स्मरण करने से अपने व पराये की पहचान हो जाती है, निज क्या है और पर क्या है – ऐसा भेदज्ञान प्रकट हो जाता है और उससे अनेक आपत्तियों का विनाश हो जाता है।

हे प्रभो ! आपकी परम शान्त मुद्रा भव्यजीवों को आत्मानुभूति में निमित्त कारण है।''

इस संदर्भ में निम्नांकित भजन की पंक्तियाँ भी द्रष्टव्य हैं –

''निरखत जिनचंद्र–वदन स्व–पद सुरुचि आई।
प्रगटी निज–आन की पिछान ज्ञानभान की
कला उदोत होत काम जामिनी पलाई।।निरखत. ।।[७]

जिनेन्द्र भगवान के स्वरूप को समझने से मोह एवं काम भी पलायन कर जाता है।''

पूजन के अंग –

पूजा में पूज्य, पूजक एवं पूजा – ये तीन अंग प्रमुख हैं। पूज्य सदृश पूर्णता एवं पवित्रता प्राप्त करना ही पूजा की सार्थकता है। पूजक पूजा करते समय पूज्य परमात्मा के गुणगान करते हैं। वह परमात्मा के जीवनदर्शन का आद्योपान्त अवलोकन करता है, अरहंत, सिद्ध और साधुओं के स्वरूप स्वभाव को समझने का प्रयत्न करता है।

''पूजा के रागभाव का भी अभाव करके पूजक वीतराग सर्वज्ञ पद

प्राप्त कर स्वयं पूज्य हो जाता है। इसी अपेक्षा से जिनवाणी में पूजा को परम्परा से मुक्ति का कारण कहा गया है।''[८]

निश्चय से पूज्य-पूजक में कोई भेद ही नहीं होता -

आचार्य योगीन्दुदेव ने लिखा है -

''मणु मिलियय परमेसरहं परमेसरु वि मणस्स।
बीहि वि समरसि हूबाहूँ पूज्ज चढावहु कस्स।।[९]

विकल्परूप मन भगवान आत्मा से मिल गया, तन्मय हो गया और परमेश्वरस्वरूप भगवान आत्मा भी मन से मिल गया। जब दोनों ही सम-रस हो गये तो अब कौन/किसकी पूजा करे ? अर्थात् निश्चयदृष्टि से देखने पर पूज्य-पूजक का भेद ही दिखाई नहीं देता तो किसको अर्घ्य चढाया जाये ?''

पूजा में परमेश्वरस्वरूप को महत्व दिया जाता है -

''यः परात्मा स एवाऽहं योऽहं स परमस्ततः।
अहमेव मयोपास्यो नान्यः कश्चिदिति स्थितिः।।[१०]

स्वभाव से जो परमात्मा है, वही मैं हूँ तथा जो स्वानुभवगम्य मैं हूँ, वही परमात्मा है; इसलिये मैं ही मेरे द्वारा उपास्य हूँ, दूसरा कोई अन्य नहीं।''

इसी बात को कुन्दकुन्दाचार्यदेव ने अभेदनय से इसप्रकार कहा है -

अरुहा सिद्धायरिया उज्झाया साहु पंच परमेट्ठी।
ते वि हु चिट्ठहि आदे तम्हा आदा हु मे सरणं।।[११]

अरहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु - ये पंच परमेष्ठी आत्मा में ही चेष्टारूप हैं, आत्मा ही की अवस्थायें हैं, इसलिए मेरे आत्मा ही का मुझे शरण है।

पूजा भेद-प्रभेद स्वरूप एवं विश्लेषण -

द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव; पूज्य, पूजक, पूजा; नाम, स्थापना आदि; इन्द्र, चक्रवर्ती आदि द्वारा की जाने वाली पूजा की अपेक्षा पूजन के अनेक भेद-प्रभेद हैं।

पूजा को द्रव्यपूजा और भावपूजा में विभाजित करते हुए आचार्य अमितगति उपासकाचार में लिखते हैं -

''वचो विग्रहसंकोचो, द्रव्यपूजा निगद्यते।
तत्र मानससंकोचो भावपूजा पुरातनैः।।[१२]

वचन और काय को अन्य व्यापारों से हटाकर स्तुत्य के प्रति एकाग्र करना द्रव्यपूजा और मन की नाना प्रकार से विकल्पजनित व्यग्रता को दूर करके ध्यान तथा गुण चिन्तनार्ा द्वारा स्तुत्य में लीन करना भावपूजा है।

यद्यपि यह परम सत्य है कि जैनदर्शन में श्रावक के छह आवश्यक कार्यों में पूजन को प्रथम स्थान प्राप्त है; तथापि उसे शुभभावरूप होने से पुण्यबंध का ही कारण माना गया है, मुक्ति का नहीं। ज्ञानीजीव भी पापभावों से बचने के लिए पूजादि आवश्यक कार्यों में प्रवृत्त होते हैं; पर वे उसे बंध का ही कारण मानते हैं, मुक्ति का कारण नहीं। ●

कुन्दकुन्दाचार्य पर गोष्ठी संपन्न

१. जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धांत महाविद्यालय में दिनाँक 8 फरवरी को आचार्य कुन्दकुन्द की जयंती मनाई गई। इस अवसर पर प्रात:काल महाविद्यालय के छात्रों द्वारा आचार्य कुन्दकुन्द की पूजन एवं सायंकाल भक्ति का विशेष आयोजन किया गया।

दिनांक 7 फरवरी को 'आचार्य कुन्दकुन्द एवं उनका साहित्य' विषय पर डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा विशेष व्याख्यान हुआ। इसके अंतर्गत डॉ. भारिल्ल ने कहा कि दिगम्बर जैन अन्वय में भगवान महावीर और गौतम स्वामी के बाद समस्त दिगम्बर मुनिराज परम्परा में कुन्दकुन्दाचार्य का सर्वप्रथम स्मरण किया जाता है।

२. कोटा (राज.) : यहाँ आचार्य धरसेन महाविद्यालय में दिनाँक 8 फरवरी को आचार्य कुन्दकुन्द की जयंती मनाई गई।

इस अवसर पर प्रात:काल महाविद्यालय के छात्रों द्वारा आचार्य कुन्दकुन्द की पूजन की गई। सायंकाल मुनिराजों की विशेष रूप से भक्ति की गई। तत्पश्चात् 'आचार्य कुन्दकुन्द एवं उनका साहित्य' विषय पर विशेष गोष्ठी हुई, जिसकी अध्यक्षता श्री बालचंदजी पटवारी ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री ज्ञानचंदजी कोटा एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री कमलचंदजी कोटा व श्री वीरेन्द्रजी हरसौरा उपस्थित थे।

इस अवसर पर शास्त्री प्रथम वर्ष के छात्रों द्वारा आचार्य कुन्दकुन्द व उनके साहित्य पर शोधपूर्ण वक्तव्य प्रस्तुत किये गये। प्राचार्य धर्मेन्द्रजी शास्त्री ने भी आचार्य कुन्दकुन्द के संबंध में वक्तव्य प्रस्तुत किया। इसके अतिरिक्त अध्यक्ष महोदय, मुख्य अतिथि व विशिष्ट अतिथि आदि महानुभावों ने भी अपने वक्तव्य प्रस्तुत किये।

महाविद्यालय के अध्यापक सौरभजी, बसन्तजी, विनोदजी, आशीषजी भी इस कार्यक्रम में उपस्थित थे।

अन्त में पण्डित रतनजी चौधरी ने आभार प्रदर्शन किया।

हार्दिक बधाई !

टोकर-उदयपुर (राज.) निवासी चि. सनतकुमार जैन एवं सौ. नेहा जैन के विवाहोपलक्ष्य में जैनपथप्रदर्शक हेतु 500/- रुपये प्राप्त हुये हैं।

1. पद्मनंदि पंचविंशति (उपासक संस्कार), पृष्ठ 128, श्लोक 7
2. भगवती आराधना, गाथा 46 की विजयोदया टीका
3. रत्नकरण्ड श्रावकाचार, श्लोक 119 की टीका, पृष्ठ 208
4. स्वयंभू स्तोत्र, छन्द 57
5. पंचास्तिकाय, गाथा 136 की टीका
6. पण्डित दौलतरामजी कृत देवस्तुति
7. पण्डित दौलतरामजी कृत आध्यात्मिक भजन
8. भुक्ति-मुक्ति दातार, चौबीसों जिनराजवर (चौबीस तीर्थंकर पूजा)
9. परमात्मप्रकाश 1/123/2
10. समाधितंत्र 31
11. अष्टपाहुड : मोक्षपाहुड, गाथा 104
12. स्तुतिविद्या, प्रस्तावना, पृष्ठ 10 : जुगलकिशोर मुख्तार

पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव संपन्न

उदयपुर (राज.) : यहाँ श्री चन्द्रप्रभ कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा आयोजित श्री नेमिनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन शुक्रवार, दिनाँक 14 जनवरी से बुधवार 19 जनवरी तक अनेक विशिष्ट कार्यक्रमों सहित सानन्द सम्पन्न हुआ।

इस प्रसंग पर भव्य जिनालय में आठवें तीर्थङ्कर भगवान चंद्रप्रभ की 51 इंची पद्मासन एवं भगवान ऋषभदेव व महावीरस्वामी की 61 इंची खड्गासन मनोज्ञ प्रतिमा विराजमान की गई।

महोत्सव में प्रतिदिन अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान **डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल** केअतिरिक्त डॉ. उत्तमचंदजी जैन सिवनी, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित वीरेन्द्रकुमार जी आगरा, पण्डित शैलेषभाई तलोद, पण्डित अनिलकुमारजी भिण्ड इत्यादि अनेक विद्वानों के भी प्रवचनों का लाभ उपस्थित जनसमुदाय को मिला।

पञ्चकल्याणक की सम्पूर्ण प्रतिष्ठा–विधि प्रतिष्ठाचार्य ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली ने सह–प्रतिष्ठाचार्य पण्डित सुबोधजी शास्त्री शाहगढ, पण्डित सुनीलकुमारजी शास्त्री 'धवल' भोपाल, पण्डित कांतिकुमारजी जैन इन्दौर, पण्डित नन्हे भैया सागर आदि के सहयोग से शुद्ध तेरापंथ आम्नायानुसार सम्पन्न कराई ।

दिनाँक १९ जनवरी को कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट मुम्बई द्वारा निर्मित श्री कुन्दकुन्द कहान स्वाध्याय भवन का उद्घाटन श्री बसंतभाई दोशी मुम्बई एवं पण्डित अभयकुमारजी देवलाली के कर कमलों से संपन्न हुआ।

इसी दिन रात्रि में डॉ. हुकमचंद भारिल्ल चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा पण्डित जिनेन्द्र शास्त्री उदयपुर का सम्मान किया गया। इस अवसर पर आत्मार्थी कन्या निकेतन की छात्राओं द्वारा सती अनन्तमती नाटिका प्रस्तुत की गई।

बालक नेमिकुमार के माता–पिता बनने का सौभाग्य श्रीमती चौसरबाई श्री कन्हैयालालजी दलावत को प्राप्त हुआ। महोत्सव के सौधर्म इन्द्र–इन्द्राणी श्री ताराचंद–निर्मला जैन थे।

महोत्सव के ध्वजारोहणकर्त्ता श्री निहालचंदजी घेवरचंदजी जैन परिवार जयपुर थे। प्रतिष्ठा मण्डप का उद्घाटन श्री मीठालालजी लिखमावत भिण्डर ने किया।

संपूर्ण महोत्सव में पूजन, प्रवचन, भक्ति एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों की धूम मची रही । इसमें मुम्बई, दिल्ली, दाहोद, अहमदाबाद, सिद्धायतन, सागर, भोपाल, इन्दौर, ध्रुवधाम–बांसवाड़ा सहित संपूर्ण देश से लगभग 5 हजार साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया।

परीक्षा सामग्री भेजें

श्री वीतराग–विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड ए–4, बापूनगर, जयपुर की शीतकालीन परीक्षायें 29 से 31 जनवरी 2011 को संपन्न हो चुकी हैं। संबंधित परीक्षा केन्द्र शीघ्रातिशीघ्र परीक्षा सामग्री भेज देवें।

– ओ.पी.आचार्य (प्रबंधक)

हार्दिक बधाई

1. लाड़नू (राज.) : जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय लाड़नू द्वारा पहली बार 'संपर्क–2011' का आयोजन किया गया, जिसमें आयोजित हुई प्रतियोगिताओं में श्री टोडरमल दि.जैन सिद्धांत महाविद्यालय सहित अनेक महाविद्यालयों के विद्यार्थियों ने भाग लिया।

इस अवसर पर 'जैन विद्या की वर्तमान में प्रासंगिकता' विषय पर आयोजित वाद–विवाद प्रतियोगिता में श्री टोडरमल दि.जैन सिद्धांत महाविद्यालय के विद्यार्थी वीरेन्द्र जैन बकस्वाहा (शास्त्री तृतीय वर्ष) ने तृतीय स्थान, 'जैन सामान्यज्ञान प्रतियोगिता' में भावेश जैन उदयपुर (शास्त्री तृतीय वर्ष) ने तृतीय स्थान, 'जैन विद्या का विकास संभव कैसे' विषय पर आयोजित निबंध प्रतियोगिता में शनि जैन खनियांधाना (शास्त्री तृतीय वर्ष) ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। इनके अतिरिक्त आशीष जैन मड़ावरा, पंकज सिंघई, सूरज मगदुम, संदेश बोरालकर, जयेश रोकड़े एवं सुदीप जैन ने सांत्वना पुरस्कार प्राप्त किया।

2. सांभरलेक–जयपुर (राज.) : टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक श्रीकृष्णचंद्रजी जैन (प्रधानाध्यापक राजकीय उच्च प्राथमिक संस्कृत विद्यालय, सांभरलेक) का उत्कृष्ट राजकीय सेवाओं के लिए गणतन्त्र दिवस के अवसर पर सार्वजनिक अभिनन्दन किया गया साथ ही उन्हें मानपत्र भी प्रदान किया गया।

महाविद्यालय एवं जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई।

पाठकों के पत्र

तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल कृत ग्रन्थाधिराज समयसार की ज्ञायकभावप्रबोधिनी टीका को पढकर **हिसार से डॉ. एस.के.जैन** लिखते हैं कि –'प्रस्तुत टीका का हम प्रतिदिन मंदिर में बैठकर स्वाध्याय करते हैं। सबके हाथ में एक–एक समयसार होता है। हम सब आनन्द विभोर हो जाते है और आपको प्रतिदिन धन्यवाद देते हैं। ऐसी सरल हिन्दी में समयसार लिखने के कारण यह जगत आपको आचार्य कुन्दकुन्द के साथ–साथ हजारों लाखों साल तक याद रखेगा। आपने बहुत बड़ा कार्य कर दिया है। आपकी सी.डी. प्रात: 4 से 5.30 बजे तक प्रतिदिन सुनते हैं – आपका बहुत–बहुत धन्यवाद।

मुक्त विद्यापीठ के छात्र ध्यान दें –

उत्तर पुस्तिकाएँ तत्काल भेजें

द्विवर्षीय विशारद कोर्स उपाध्याय परीक्षा एवं त्रिवर्षीय सिद्धांत कोर्स शास्त्री परीक्षा के द्वितीय सेमेस्टर की परीक्षाएँ दिसम्बर 2010 में संपन्न हो चुकी हैं। जिन परीक्षार्थियों ने अभी तक भी अपनी उत्तर पुस्तिकायें नहीं भेजी हों, कृपया वे तत्काल भिजवा देवें, ताकि रिजल्ट एवं प्रमाण–पत्र जैसे कार्य समय पर पूर्ण हो सकें।

– ओ.पी.आचार्य (प्रबंधक–श्री टोडरमल जैन मुक्त विद्यापीठ)

विज्ञापन

मुमुक्षु मण्डप

जबलपुर

मोक्षमार्ग प्रकाशक का सार

68 अठारहवाँ प्रवचन

– डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

अब वे व्यवहाराभासी शास्त्रभक्ति किसप्रकार करते हैं ह्न इसकी बात करते हैं ह्न

''कितने ही जीव तो यह केवली भगवान की वाणी है, इसलिए केवली के पूज्यपने के कारण यह भी पूज्य है – ऐसा जानकर भक्ति करते हैं। तथा कितने ही इसप्रकार परीक्षा करते हैं कि इन शास्त्रों में विरागता, दया, क्षमा, शील, संतोषादिक का निरूपण है; इसलिए यह उत्कृष्ट है – ऐसा जानकर भक्ति करते हैं।

सो ऐसा कथन तो अन्य शास्त्र वेदान्तादिक में भी पाया जाता है।

तथा इन शास्त्रों में त्रिलोकादिक का गंभीर निरूपण है; इसलिए उत्कृष्टता जानकर भक्ति करते हैं; परन्तु यहाँ अनुमानादिक का तो प्रवेश नहीं है; इसलिए सत्य-असत्य का निर्णय करके महिमा कैसे जानें ? इसलिए इसप्रकार सच्ची परीक्षा नहीं होती।

यहाँ तो अनेकान्तरूप सच्चे जीवादितत्त्वों का निरूपण है और सच्चा रत्नत्रयरूप मोक्षमार्ग दिखलाया है। उसी से जैनशास्त्रों की उत्कृष्टता है, उसे नहीं पहिचानते; क्योंकि यह पहिचान हो जाये तो मिथ्यादृष्टि रहती नहीं।[१]''

यहाँ **मिथ्यादृष्टि रहती नहीं** का अर्थ यह है कि दृष्टि में मिथ्यात्व नहीं रहता।

जिसप्रकार के तर्क गुरुभक्ति के संदर्भ में दिये गये हैं, लगभग उसीप्रकार के तर्क यहाँ शास्त्रभक्ति के संदर्भ में भी दिये गये हैं।

कुछ व्यवहाराभासी लोग तो 'यह केवली भगवान की वाणी है, इसलिए पूज्य है' – मात्र इतना जानकर शास्त्रभक्ति करते हैं।

यदि कुछ लोग परीक्षा भी करते हैं तो इनमें दया, दान, क्षमा आदि की अच्छी-अच्छी बातें हैं; इसलिए ये महान हैं – ऐसा जानकर भक्ति करते हैं। परन्तु **ये दया-दानादि की बातें तो लगभग सभी धर्मों के साहित्य में प्राप्त होती हैं; इनसे दिगम्बर जैन शास्त्रों की सच्चाई और अच्छाई कैसे जानी जा सकती है ?**

कुछ लोग यह कहते हैं कि इसमें तीन लोकों का गंभीर वर्णन है; पर उक्त कथन की परीक्षा करना संभव नहीं है; क्योंकि 'सुमेरु पर्वत एक लाख योजन का है' – इस बात की सच्चाई जानने का हमारे पास क्या उपाय है ? इस बात को सिद्ध करना भी संभव नहीं है; क्योंकि हमारे पास कोई ऐसी युक्ति या तर्क नहीं है कि हम इस बात को प्रमाणित कर सकें।

उक्त कथनों के आधार पर शास्त्रों की परीक्षा करना संभव नहीं है।

इन शास्त्रों में अनेकान्तात्मक वस्तुस्वरूप का निरूपण है, सात तत्त्वों की चर्चा है। सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्ररूप मोक्षमार्ग की चर्चा है। इन बातों की परीक्षा भी संभव है और इनके कारण ही शास्त्र महान हैं; क्योंकि इन्हें जाने बिना दुख से मुक्त होना संभव नहीं है।

ये व्यवहारभासी लोग इनको तो जानते ही नहीं हैं। यदि जानते होते तो दृष्टि का मिथ्यात्व गये बिना नहीं रहता।

इसप्रकार व्यवहाराभासियों की शास्त्रभक्ति का अन्यथा रूप प्रस्तुत किया। अब देव-शास्त्र-गुरु संबंधी उक्त प्रकरण का समापन करते हुए पण्डितजी लिखते हैं –

''इसप्रकार इसको देव-शास्त्र-गुरु की प्रतीति हुई, इसलिए व्यवहारसम्यक्त्व हुआ मानता है। परन्तु उनका सच्चा स्वरूप भासित नहीं हुआ है; इसलिए प्रतीति भी सच्ची नहीं हुई है। सच्ची प्रतीति के बिना सम्यक्त्व की प्राप्ति नहीं होती; इसलिए यह मिथ्यादृष्टि ही है।[१]''

तात्पर्य यह है कि जिनागम में देव-शास्त्र-गुरु के श्रद्धान को सम्यग्दर्शन कहा गया है, पर इसकी देव-शास्त्र-गुरु संबंधी मान्यता भी सही नहीं है; अत: यह सम्यग्दृष्टि कैसे हो सकता है ?

देखो, कुदेव, कुगुरु, कुशास्त्र या कुधर्म संबंधी मान्यता की चर्चा गृहीत मिथ्यात्व के प्रकरण में तीन स्थानों पर की गयी है।

पहली बार तो जैनेतर कुदेव, कुगुरु और कुशास्त्र संबंधी चर्चा पाँचवें अधिकार में; दूसरी बार बीस पंथ संबंधी कुदेव, कुगुरु और कुधर्म संबंधी चर्चा छठवें अधिकार में और यह तीसरी बार शुद्ध तेरापंथ संबंधी कुदेव, कुगुरु और कुशास्त्र संबंधी चर्चा इस सातवें अधिकार में व्यवहाराभासी के प्रकरण में - इसप्रकार तीन स्थानों पर इनकी चर्चा हुई है। प्रकरण के अनुसार उस चर्चा का स्वरूप भी बदलता गया है।

यदि हम इस बात पर बारीकी से ध्यान देकर अध्ययन करें तो यह सब स्पष्ट होता चला जायेगा कि उक्त चर्चाओं में परस्पर क्या अन्तर है।

इसप्रकार व्यवहाराभासी मिथ्यादृष्टि की देव-शास्त्र-गुरु संबंधी मान्यता पर विचार करने के उपरान्त अब देव-शास्त्र-गुरु के श्रद्धान के समान तत्त्वार्थों के श्रद्धान को भी सम्यग्दर्शन कहा गया है; इसलिए इस व्यवहाराभासी मिथ्यादृष्टि के तत्त्वार्थश्रद्धान के संदर्भ में विचार करते हैं।

व्यवहाराभासी गृहीत मिथ्यादृष्टि का तत्त्वार्थश्रद्धान क्यों सही नहीं है – इस बात को प्रस्तुत करते हुए पण्डित टोडरमलजी लिखते हैं –

''तथा शास्त्र में 'तत्त्वार्थश्रद्धानं सम्यग्दर्शनं' (तत्त्वार्थसूत्र १-२) ऐसा वचन कहा है – इसलिए शास्त्रों में जैसे जीवादि तत्त्व लिखे हैं, वैसे आप सीख लेता है और वहाँ उपयोग लगाता है, औरों को उपदेश देता है; परन्तु उन तत्त्वों का भाव भासित नहीं होता और यहाँ उस वस्तु के भाव ही का नाम तत्त्व कहा है। सो भाव भासित हुए बिना तत्त्वार्थ-श्रद्धान कैसे होगा ?[२]''

पण्डितजी कहते हैं कि ये व्यवहाराभासी मिथ्यादृष्टि लोग जीवादि तत्त्वों के नाम, परिभाषा आदि तो शास्त्रानुसार सीख लेते हैं; क्योंकि शास्त्रों में तत्त्वार्थश्रद्धान को सम्यग्दर्शन कहा है।

न केवल स्वयं सीखते हैं; अपितु दूसरे लोगों को भी सिखाते हैं, उनके गुरु बन जाते हैं; परन्तु वास्तविक स्थिति तो ऐसी है कि इन्हें स्वयं

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, सातवाँ अधिकार, पृष्ठ २२३-२२४

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, सातवाँ अधिकार, पृष्ठ २२४ २. वही, पृष्ठ २२४

को भी उक्त तत्त्वों का भाव भासित नहीं होता।

ये लोग तो तोते के समान उनके नाम सीख लेते हैं, उनकी परिभाषायें रट लेते हैं, उनके भेद-प्रभेदों को याद कर लेते हैं; पर यह नहीं समझते कि इनका वास्तविक भाव क्या है ?

यदि भाव भासित नहीं हुआ तो, वस्तुत: उनका ज्ञान ही नहीं हुआ है; क्योंकि भावभासन बिना कोरे जानने को कोई अर्थ नहीं होता।

जबतक तत्त्वार्थों का भाव भासित नहीं होगा, तबतक तत्त्वार्थ का श्रद्धान भी संभव नहीं है; अत: वे व्यवहाराभासी लोग मिथ्यादृष्टि ही हैं।

यदि सम्यग्दर्शन और सम्यग्ज्ञान की प्राप्ति के लिए तत्त्वों का भावभासन इतना आवश्यक है तो यहाँ पर यह प्रश्न उठना स्वाभाविक ही है कि भावभासन शब्द का वास्तविक अर्थ क्या है, आखिर भावभासन कहते किसे हैं ? इस प्रश्न का उत्तर देते हुए पण्डित टोडरमलजी कहते हैं-

''जैसे कोई चतुर पुरुष होने के अर्थ शास्त्र द्वारा स्वर, ग्राम, मूर्छना, रागों का स्वरूप और ताल-तान के भेद तो सीख लेता है; परन्तु स्वरादिक का स्वरूप नहीं पहिचानता। स्वरूप की पहिचान हुए बिना अन्य स्वरादिक को अन्य स्वरादिकरूप मानता है अथवा सत्य भी मानता है तो निर्णय करके नहीं मानता है; इसलिए उसके चतुरपना नहीं होता।

उसीप्रकार कोई जीव सम्यक्त्वी होने के अर्थ शास्त्र द्वारा जीवादिक तत्त्वों का स्वरूप सीख लेता है; परन्तु उनके स्वरूप को नहीं पहिचानता है। स्वरूप को पहिचाने बिना अन्य तत्त्वों को अन्य तत्त्वरूप मान लेता है अथवा सत्य भी मानता है तो निर्णय करके नहीं मानता; इसलिए उसके सम्यक्त्व नहीं होता।[१]''

यहाँ संगीत शास्त्र के उदाहरण के माध्यम से तत्त्वों के भावभासन को समझाया गया है। जिसप्रकार कोई व्यक्ति स्वरों व रागों के नाम, परिभाषायें और उदाहरण तो रट ले; पर जब कोई व्यक्ति उसी राग को गा रहा हो तो न जान पाये कि यह कौनसा स्वर है या कौनसा राग है तो समझ लेना कि इसे स्वरों का, रागों का भावभासन नहीं है।

इसीप्रकार यह व्यवहाराभासी मिथ्यादृष्टि जीवाजीवादि तत्त्वों के नाम तो सीख लेता है, परिभाषायें तो रट लेता है, पर दृष्टि के विषयभूत जीवतत्त्व को न पहिचान पाता; ऐसी स्थिति में वह अपनापन किसमें स्थापित करेगा, किसे निजरूप जानेगा और ध्यान भी किसका करेगा ? यदि जीवतत्त्व का ज्ञान, श्रद्धान और ध्यान नहीं हुआ तो सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्र भी नहीं होंगे। इनके बिना मुक्ति का मार्ग कैसे प्राप्त होगा ?

अब इसी बात को आगे बढ़ाते हुए पण्डितजी कहते हैं -

''तथा जैसे कोई शास्त्रादि पढ़ा हो या न पढ़ा हो; परन्तु स्वरादिक के स्वरूप को पहिचानता हो तो वह चतुर ही है; उसीप्रकार शास्त्र पढ़ा हो या न पढ़ा हो; यदि जीवादिक के स्वरूप को पहिचानता है तो वह सम्यग्दृष्टि ही है।[२]''

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, सातवाँ अधिकार, पृष्ठ २२४-२२५ २. वही, पृष्ठ २२४

ऐसे बहुत से ग्रामीण लोग होते हैं कि जिन्हें संगीत शास्त्र का अध्ययन तो नहीं होता; परन्तु वे संगीत के स्वरों को पहिचानते हैं; उसीप्रकार ऐसे भी **अनेक लोग होते हैं कि जिन्हें जैनदर्शन का गहरा अध्ययन तो न हो; पर वे जीवादि तत्त्वों के स्वरूप को, भाव को भलीभाँति जानते हों, तो उन्हें उनका भावभासन होता है।**

इस पर भी यदि किसी को कोई विकल्प हो तो उसके विकल्प का शमन करते हुए पण्डितजी कहते हैं -

''जैसे हिरन स्वर-रागादिक का नाम नहीं जानता, परन्तु उसके स्वरूप को पहिचानता है; उसीप्रकार तुच्छबुद्धि जीवादिक का नाम नहीं जानते, परन्तु उनके स्वरूप को पहिचानते हैं कि 'यह मैं हूँ, ये पर हैं; ये भाव बुरे हैं, ये भले हैं' - इसप्रकार स्वरूप को पहिचाने उसका नाम भाव भासना है।[१]''

देखो, यहाँ पण्डितजी हिरण का उदाहरण देकर अपनी बात को स्पष्ट कर रहे हैं कि जब हिरण जैसे पशु को स्वरों का भावभासन हो जाता है तो अल्पबुद्धि जीवों को आत्मतत्त्व का भावभासन क्यों नहीं हो सकता ?

उक्त बात की पुष्टि में शिवभूति मुनि का उदाहरण देते हुए पण्डितजी कहते हैं -

''शिवभूति मुनि जीवादिक का नाम नहीं जानते थे, और 'तुषमास-भिन्नं'[२] ऐसा रटने लगे। सो यह सिद्धान्त का शब्द था नहीं; परन्तु स्व-पर के भावरूप ध्यान किया, इसलिए केवली हुए।

और ग्यारह अंग के पाठी जीवादि तत्त्वों के विशेष भेद जानते हैं; परन्तु भाव भासित नहीं होता, इसलिए मिथ्यादृष्टि ही रहते हैं।[३]''

शिवभूति मुनि संबंधी जो गाथा टिप्पणी में दी गई है; उसका भाव इसप्रकार है - **''शिवभूति नामक महानुभाव तुषमास शब्दों को रटते हुए भावों की विशुद्धता से केवलज्ञानी हुए।''**

उक्त कथन से यह बात अत्यन्त स्पष्ट है कि आत्मज्ञान के लिए, आत्मानुभूति के लिए, यहाँ तक कि केवलज्ञान की प्राप्ति के लिए भी; न तो अत्यधिक बुद्धि की आवश्यकता है और न अधिक शास्त्रों के अध्ययन की भी आवश्यकता है।

सैनी पंचेन्द्रिय कोई व्यक्ति प्रयोजनभूत तत्त्वों को भावभासनपूर्वक जान ले, पहिचान ले और उनमें से अपने आत्मतत्त्व को जान ले, निजरूप जान ले, उसी में अपनापन स्थापित कर ले और उसी में जम जावे, रम जावे तथा उसी में समा जावे तो अपने लक्ष्य की प्राप्ति कर सकता है। यदि आत्मतत्त्व का भावभासन नहीं हुआ तो सम्पूर्ण पठन-पाठन निष्फल ही समझो। ●

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, सातवाँ अधिकार, पृष्ठ २२४

२. **तुसमासं घोसंतो भावविसुद्धो महाणुभावो य।**
णामेण य सिवभूई केवलणाणी फुडं जाओ।। भावपाहुड, ५३।।
कहाँ तक बतावें अरे महिमा तुम्हें भावविशुद्धि की।
तुषमास पद को धोखते शिवभूति केवलि हो गये।।५३।।

३. मोक्षमार्गप्रकाशक, सातवाँ अधिकार, पृष्ठ २२४-२२५

17 फरवरी 2011, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-61 / 2009-11

शोक समाचार

१. राधौगढ-अशोकनगर (म.प्र.) निवासी श्री बाबूलालजी जैन 'लालाजी' का दिनाँक 10 जनवरी को 84 वर्ष की आयु में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप वात्सल्यमूर्ति, शांतपरिणामी एवं अत्यंत स्वाध्यायी थे। आप स्वाध्याय ट्रस्ट मुमुक्षु मण्डल मंदिर के स्थायी सदस्य थे। आपकी स्मृति में संस्था को 1100/- रुपये प्राप्त हुये।

२. खनियांधाना (म.प्र.) निवासी श्री दयाचंदजी साव का दिनाँक 24 जनवरी को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप अत्यंत धार्मिक एवं स्वाध्यायी थे। ज्ञातव्य है कि आप टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक श्री राकेशजी शास्त्री, श्री संजयजी शास्त्री व श्री अचलजी शास्त्री दिल्ली के दादाजी एवं श्रुति शास्त्री व ईर्या शास्त्री के परदादाजी थे। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक हेतु 101/- रुपये प्राप्त हुये।

३. सिंगोड़ी (म.प्र.) निवासी पण्डित देवेन्द्रजी जैन का दिनाँक 1 फरवरी को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप अत्यंत स्वाध्यायी एवं प्रवचनकार थे। दशलक्षण एवं अष्टाह्निका महापर्व के अवसर पर प्रवचनार्थ जाया करते थे। आपके निधन से मुमुक्षु समाज को अपूरणीय क्षति हुई है।

४. रखियाल (गुज.) निवासी शाह नाथालाल खेडिदासजी का दिनाँक 10 जनवरी को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप अत्यंत स्वाध्यायी थे। श्रावण माह में लगने वाले शिविर में आप सोनगढ जाया करते थे। आपकी स्मृति में वीतराग-विज्ञान एवं जैनपथप्रदर्शक हेतु 551-551/- रुपये प्राप्त हुये।

५. जयपुर (राज.) निवासी श्री धन्नालाल आर.जैन का दिनाँक 21 दिसम्बर को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में वीतराग-विज्ञान एवं जैनपथप्रदर्शक हेतु 200-200/- रुपये प्राप्त हुये।

६. जयपुर (राज.) निवासी श्रीमती पुष्पा जैन (पहाड़िया) (निजी

सचिव, शासन सचिवालय, जयपुर) धर्मपत्नी श्री सुशील कुमारजी जैन (सहायक शासन सचिव, शासन सचिवालय, जयपुर) का दिनाँक 28 दिसम्बर 2010 को आकस्मिक निधन हो गया। आप अत्यंत स्वाध्यायी थीं। टोडरमल स्मारक में लगनेवाले प्रत्येक शिविर में आप नियमित आती थीं। आपकी स्मृति में वीतराग-विज्ञान एवं जैनपथप्रदर्शक हेतु 501-501/- रुपये प्राप्त हुये।

७. कलकत्ता निवासी श्रीमती मनभरीदेवी पाटनी धर्मपत्नी श्री बालचंदजी पाटनी का दिनाँक 19 जनवरी को 72 वर्ष की आयु में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक हेतु 1100/- रुपये प्राप्त हुये।

८. टेलिकुनी-गुलबर्गा (कर्नाटक) निवासी श्री शिवगुण्डप्पा का दिनाँक 7 फरवरी को 80 वर्ष की आयु में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। ज्ञातव्य है कि आप टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक श्रीमंत नेज के पिताजी थे।

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हों - यही भावना है।

श्री धनकुमारजी जैन, सूरत द्वारा अनुवादित ब्र. रायमलजी कृत 'ज्ञानानन्द श्रावकाचार' छपकर तैयार है। इच्छुक महानुभाव 35/-रुपये मूल्य में श्री टोडरमल स्मारक भवन से प्राप्त कर सकते हैं।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

7 मार्च	चन्देरी	प्रवचन
8 व 9 मार्च	घुवारा	वेदी प्रतिष्ठा
13 मार्च	जयपुर (नेवटा)	प्रवचन
15 से 20 मार्च	लोनावाला	प्रतिष्ठा समारोह
16 अप्रैल	दिल्ली	महावीर जयन्ती
10 से 12 मई	मेरठ	वेदी प्रतिष्ठा
15 मई से 1 जून	जयपुर	प्रशिक्षण शिविर
3 जून से 24 जुलाई	विदेश(लंदन-अमेरिका)	धर्मप्रचारार्थ

उज्ज्वल भविष्य की कामना !

अजमेर (राज.) : यहाँ माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान द्वारा आयोजित दीक्षान्त समारोह में दिनाँक 11 फरवरी को टोडरमल महाविद्यालय के छात्र जयेश जैन उदयपुर (शास्त्री तृतीय वर्ष) को वरिष्ठ उपाध्याय (12वीं) में सम्पूर्ण राजस्थान में मेरिट में तृतीय स्थान प्राप्त करने पर शिक्षा मंत्री मास्टर भंवरलालजी मेघवाल द्वारा रजत पदक एवं योग्यता प्रमाण पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया।

जैन पथप्रदर्शक परिवार आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-

वेबसाईट - www.vitragvani.com

संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई

Ph.: 022-26130820, 26104912, E-Mail- info@vitragvani.com

प्रकाशन तिथि : 13 फरवरी 2010

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, डबल एम.ए.(जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : info@ptst.in **फैक्स :** (0141) 2704127